भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 31

तेरो बुरो न कोऊ मानै।

रस की बात मधुप नीरस, सुनु, र सक होत सो जानै।।

दादुर बसै निकट कमलन कै जन्म न रस पहिचानै।

अ लि अनुराग उड़न मन बाँध्यो कहे सुनत नहि कानै।।

सरिता चलै मलन सागर को कूल भूल द्रुम भानै।

कायर बकै, लोह तें भाजै, लरै जो सूर बखानै।।

शब्दार्थ-

भानै- तोड़ती है। लोह- लोहा, ह थयार।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)
पद क्र 31
काव्य सौंदर्य

1. दृष्टांत (बिना समतावाचक शब्द के जहाँ बिंब-प्रतिबिंब भाव से समानता हो) वृत्यानुप्रास अलंकार तथा "भावै" जैसे स्वाभा वक प्रयोगों ने भाषा का श्रृंगार कया है।
2. तेरो बुरो न कोऊ मानै- में वक्रोक्ति अलंकार है।
3. सरिता चलै मलन सागर को कूल भूल द्रुम भानै- में अप्रस्तुत प्रशंसा है।
4. कायर बकै, लोह तें भाजै, लरै जो सूर बखानै- में अर्थान्तरन्यास है।
5. प्रस्तुत पद राग घनाश्री में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 32

घर ही के बाढे रावरे।
नाहिंन मीत बियोगबस परे अनवउगे अ ल बावरे!
भुख मरि जाय चरै नहिं तिनुका संह को यहै स्वभाव रे!
स्रवन सुधा मुरली के पोषे जोग जहर न खवाव, रे;
ऊधो हमहि सीख का दैहो? हरि बिनु अनत न ठाँव रे!
सूरदासजी कहा लै कीजै थाही नँदिया नाव, रे!

शब्दार्थ-

घर ही के बाढे- अपने ही घर बढ़बढ़ कर बात करनेवाले।
अनवउगे- अँगवोगे, सहोगे।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 32

काव्य सौंदर्य

1भ्रख मरि जाय चरै नहिं तिनका संह को यैहै स्वभाव रे- में उदाहरण अलंकार है।

2. सुधा मुरली के- में रूपक अलंकार है।

3. सूरदासजी कहा लै कीजै थाही नदिया नाव, रे में- तुल्यो गता अलंकार है।

4. प्रस्तुत पद राग घनाश्री में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 33

स्याममुख देखे ही परतीति।
जो तुम कोटि जतन करि सखवत जोग ध्यान की रीति।।
नाहिंन कछू सयान ज्ञान में यह हम कैसे मानैं।
कहौ कहा कहिए या नभ को कैसे उर में आनैं।।
यह मन एक, एक वह मूरति, भृंगकीट सम माने।
सूर सपथ दै बूझत ऊधौ यह ब्रज लोग सयाने।।

शब्दार्थ-

भृंगकीट- बिलनी नाम का कीड़ा जिसके वषय में प्र सद्ध है क वह और कीड़े को पकड़कर उसे अपने रूप का कर देता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 33

काव्य सौंदर्य

1.कहौ कहा कहिए या नभ को कैसे उर में आनैं- में रूपकातिश्योक्ति अलंकार है।

2. यह मन एक, एक वह मूरति, भृंगकीट सम माने- में उपमा अलंकार है।

3. भृंगकीट- यह उपमा वेदांतियों की है जिसके अनुसार ज्ञाता ज्ञेय को भृंगी नाम के कट के समान याने अपने समान ही बना लेता है। इस कीट वशेष के वषय में प्र सद्ध है क भृंगी कसी कीट के चारों ओर घूमता रहता है और भृंगी को ध्यानस्थ होकर देखने से कीट भी भृंग हो जाता है। यही वेदांतियों का भृंगकीट न्याय कहलाता है।

4. गो पयां कृष्ण से जिस प्रेम सागर में धंस चुकी है उस से निकल नहीं सकती यही भाव इस पद में है।

5. यह पद राग मल्हार में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 34

लरिकाई को प्रेम, कहौ अ ल, कैसे करिकै छूटत?
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित अब अंतरगति यों लूटत।
चंचल चाम मनोहर चतवनि, वह मुसुकानि मंद धुनि गावत।
नटवर भेस नंदनंदन को वह बिनोद गृह बन तें आवत।।
चरनकमल की सपथ करति हौं यह सँदेस मोहिं वष सम लागत।
सूरदास मोहि नि मष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत।

शब्दार्थ-

अंतरगति- चत की वृ त्त, मन।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 34

काव्य सौंदर्य

1. चरनकमल में रूपक अलंकार है।
2. यह सँदेस मोहिं वष सम लागत में उपमा अलंकार है।
3. प्रस्तुत पद में ज्ञान का खंडन अपनी ववशता बताकर कया गया है।
4. प्रस्तुत पद में कृष्ण के रूप-रस का ध्यान है।
5. यह पद राग धनाश्री में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 35

अटपटि बात तिहारी ऊधो सुनै सो ऐसी को है?
हम अहीरि अबला सठ, मधुकर! तिन्हैं जोग कैसे सो है?
बु चहि खुभी आँधरी काँजर, नकटी पहिरै बेसरि।
मुँडली पाटी पारन चाहै, कोढ़ी अंगहि केसरि।।
बाँहिरी सों पति मतो करै सो उतर कौन पै पावै?
ऐसी न्याव है ताको ऊधो जो हमैं जोग सखावै।।
जो तुम हमको लाए कृपा करि सर चढ़ाय हम लीन्हे।
सूरदास नरियर जो वष को करहिं बंदना कीन्हे।।

शब्दार्थ-

बुची- कनपटी, जिसका कान कटा हो। खुभी- कान में पहनने का एक गहना, लौंग। बेसरि- नाक में पहनने का एक गहना। मतो करै- सलाह करे।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 35

काव्य सौंदर्य

1.इस पद के अंतिम पंक्ति में उपमा अलंकार है।

2. प्रस्तुत पद राग सोरठ में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)
पद क्र 36

बरु वै कुब्जा भलो कयो।
सुनि सुनि समाचार ऊधो मो कछुक सरात हियो।।
जाको गुन, गति, नाम, रूप, हरि हार यो, फरि न दियो।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँ स हँ स लोग जियो।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति बस्य कयो।
और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लयो।।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 36

काव्य सौंदर्य

1. प्रस्तुत पद में व्यंग्य ध्वनित होता है।
2. प्रस्तुत पद असूया नामक संचारी भाव व्याप्त है।
3. यहाँ "दुर्जन दोष न्याय" पद्धति का कुशलता से प्रयोग किया गया है।
4. यह पद राग वहागरो में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 37

हरि काहे के अंतर्यामी?
जौ हरि मलत नहीं यहि औसर, अव ध बतावत लामी।।
अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी?
सो कह पीर पराई जानै जो हरि गरुडागामी।।
आई उघरि प्रीति कलई सी जैसे खाटी आमी।
सूर इते पर अनख मरति हैं, ऊधो, पीवत मामी।।

शब्दार्थ-

लामी- लंबी। चोप- चाह, जाव। बेकामी- निष्काम।
अनख- कुढ़न। मामी पीना- कसी बात को पी जाना

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 37

काव्य सौंदर्य

1. गरुडागामी में अर्थश्लेश है।
2. आई उघरि प्रीति कलई सी जैसे खाटी आमी में उपमा अलंकार है।
3. प्रस्तुत पद् मनी मुहावरों का प्रचुर प्रयोग कया गया है।
4. पीवत मामी- इसका अर्थ शुक्ल जी ने अपनी पाद-टिप्प णयों में कसी बात को पी जाना, साफ इनकार करना दिया है कन्तु ब्रज में यह मुहावरा हिमायत लेने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।
5. प्रस्तुत पद राग सारंग में गाया जाता है।

शुक्ल)

पद क्र 38

बिलग जनि मानहू, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर को कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अ धकै छबि उपजत कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़ें लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई का लदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

शब्दार्थ-

मनिआरे- सुहावना, रौनक। माट- मटका, मट्टी का बरतन।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 38

काव्य सौंदर्य

1. अलंकार हेतूत्प्रेक्षा एवं तदगुण ("छा ड़ अपनो गुन जहां, औरन को गुन लेत। अलंकार तद्गुण तहाँ, वरनै कै व हरि होत।)

2. समस्त कृष्ण काव्य में काले रंग को लेकर बड़ा व्यंग कया गया है, यथा सूर के समान रत्नाकर ने भी ब्रज की टकसाल के समस्त सक्कों को खुट्टल घो षत कर दिया है-
"मधुपुर वारे एके ढारढारे हो।"
कंतु सूर की वशेषता यह है क अन्य क वयों ने जहां केवल वर्ण मात्र पर व्यंग्य कया है, सूर काले के अंतर में भी काला गुण बताना चाहते हैं।(सूर श्याम गुन न्यारे)।

3. प्रस्तुत पद राग सारंग में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचद्र शुक्ल)

पद क्र 39

अपने स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ, मधुप रस लंपट! तुम देखे अरु वोऊ।।
औरौ कछू सँदेस कहन को कहि पठयो कन सोऊ।
लीन्हे फिरत जोग जुवतिन को बड़े सयाने दोऊ।।
तब कत मोहन रास खलाई जो पै ज्ञान हुतोऊ?
अब हमरे जिय बैठो यह पद 'होनी होउ सो होऊ'।।
मटि गयो मान परेखो ऊधो हिरदय हतो सो होऊ।
सूरदास प्रभु गोकुलनायक चत चंता अब खोऊ।।

शब्दार्थ-

मान परेखो- आसरा, भरोसा।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. रामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 39

काव्य सौंदर्य

1. अंतिम पंक्ति में पुष्टिमार्गीय भक्तों के अनुकूल ' शशिमाजौरवत' समर्पण भाव गौ पयों में दृष्टिगत होता है।
2. प्रस्तुत पद राग सारंग में गाया जाता है।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 40

तुम जो कहत सँदेसो आनि।
कहा करौं वा नँदनंदन सो होत नहीं हितहानि?
जोग जुगुति कहि काज हमारे जद प महा सुखखानि?
सने सँनेह स्यामसुंदर के हि ल म ल कै मनँ मानि।।
सोहत लोह पर सँ पारस ज्यों सुबरन बारह बानि।
पुनि वह चोप कहाँ चुंबक ज्यों लँटपटाय लपटानि।।
रूपरहित नीरासा निरगुन निगमह परत न जानि।
सूरदास कौन बि ध तौंसों अब कीजै पहिचानि?

शब्दार्थ-

बारह बानि- द्वादश वर्ण अर्थात् सूर्य की तरह चमकनेवाला खरा।

भ्रमरगीत सार- सूरदास (आ. ररामचंद्र शुक्ल)

पद क्र 40

काव्य सौंदर्य

1.प्रस्तुत पद में छेकानुप्रास एवं अन्त्यानुप्रास तथा दृष्टांत अलंकार है।

2. सने सनेह स्यामसुंदर में अनुप्रास अलंकार है।

3. यहां भी गोपीकाएँ 'सायुज्य' नहीं 'सान्निध्य' की कामना करती है।

4. प्रस्तुत पद राग सारंग में गाया जाता है।